कुरुक्षेत्र

खादी : नवाचार, वहनीयता और भारत का टेक्सटाइल पुनरुत्थान

परिचय

- भारत का प्रसिद्ध हाथ से काता व बुना हुआ कपड़ा 'खादी' विरासत, वहनीयता और ग्रामीण आजीविका के संगम का प्रतीक है। अपनी प्राचीन सभ्यता की जड़ों और स्वतंत्रता संग्राम में अपनी केंद्रीय भूमिका से लेकर एक प्रीमियम, पर्यावरण-सचेत टेक्सटाइल के रूप में समकालीन पुनरुद्धार तक खादी भारत की विकसित होती विकास गाथा को दर्शाती है। जलवायु परिवर्तन, नैतिक उपभोग एवं समावेशी विकास के संदर्भ में खादी सतत विकास के एक स्तंभ के रूप में फिर से उभरी है।

खादी : अवधारणा और महत्त्व

- खादी (खद्दर) हाथ से काता और बुना हुआ एक कपड़ा है जो कपास, रेशम, ऊन या मिश्रण जैसे प्राकृतिक रेशों से बनाया जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में इसका उद्भव हुआ है जिसमें आज का बांग्लादेश भी शामिल है।
- खादी की विशेषताएँ हैं-
  - हवादार और आरामदायक
  - बहुमुखी तापीय उपयोग (गर्मियों में ठंडा, सर्दियों में गर्म)
  - अत्यंत निम्न कार्बन फुटप्रिंट
  - विकेन्द्रीकृत, गाँव-आधारित उत्पादन

- एक टेक्सटाइल होने के अलावा खादी ग्रामीण रोजगार का सृजन करती है, महिला कारीगरों को सशक्त बनाती है और संसाधन-गहन फास्ट फैशन का एक स्थायी विकल्प प्रदान करती है।

खादी का ऐतिहासिक विकास

- प्राचीन और मध्यकालीन जड़ों के रूप में मोहनजोदारो से मिले पुरातात्विक निष्कर्ष खादी जैसे हाथ से बुने हुए वस्त्रों की उपस्थिति का सुझाव देते हैं।
- मौर्य काल के दौरान खादी जैसे सूती कपड़ों का आर्थिक महत्त्व था, जिसमें चाणक्य के अर्थशास्त्र में संगठित वस्त्र उत्पादन का संदर्भ दिया गया है।
- अजंता गुफाओं में मिले चित्र भारत की हाथ से काते और बुने हुए कपड़ों की लंबी परंपरा को अधिक पुष्ट करते हैं।
- स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान खादी ने वर्ष 1918 में आधुनिक राजनीतिक महत्त्व प्राप्त किया, जब महात्मा गांधी ने ग्रामीण गरीबी को दूर करने और औपनिवेशिक आर्थिक शोषण का विरोध करने के लिए खादी आंदोलन शुरू किया।
- चरखा स्वदेशी, आत्मनिर्भरता एवं राष्ट्रीय प्रतिरोध का प्रतीक बन गया, जिसमें खादी ने सादगी, अनुशासन व श्रम की गरिमा के गांधीवादी मूल्यों को मूर्त रूप दिया।

आज़ादी के बाद संस्थागत सहायता

- आज़ादी के बाद इस सेक्टर को खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (KVIC)] 1957 के जरिए संस्थागत बनाया गया। KVIC के कार्यों में शामिल हैं :
  - कच्चे माल की आपूर्ति करना
  - उत्पादन तकनीकों में सुधार करना
  - गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करना
  - विपणन एवं बिक्री को बढ़ावा देना
  - टिकाऊ ग्रामीण रोजगार सृजित करना

- इसके बावजूद खादी धीरे-धीरे मुख्यधारा की अपील खोती गई और राजनीतिक पहनावे व पुराने फैशन से जुड़ गई तथा वर्ष 1980 के दशक के अंत तक यह काफी हद तक समकालीन फैशन से बाहर रही।

डिजाइनर के नेतृत्व में पुनरुद्धार

- 1980 के दशक के आखिर से 1990 के दशक तक पुनरुद्धार का दौर रहा। देविका भोजवानी (1989) और रितु कुमार (1990) जैसे डिजाइनरों ने निम्न नवाचार प्रस्तुत किया-
  - नवीन बनावट और रंगाई तकनीकें
  - समकालीन पैटर्न और छायाकृति
  - फैशन-फॉरवर्ड समझ
- हालाँकि, शुरुआती प्रभाव सीमित था किंतु इन प्रयासों ने खादी को एक प्रीमियम, कारीगरी एवं टिकाऊ कपड़े के रूप में फिर से स्थापित किया, जिससे यह प्रामाणिकता व पर्यावरण के प्रति जागरूक फैशन की बढ़ती मांग के साथ जुड़ गया।

सामग्री और तकनीकी नवाचार

- हालिया पुनरुत्थान सामग्री एवं प्रक्रिया नवाचार से प्रेरित हैं जिसमें टिकाऊपन, ड्रेप एवं कार्यक्षमता में सुधार के लिए लिनन, बांस, सन, टेन्सेल व रेशम के साथ मिश्रण और कम प्रभाव वाले रंगों तथा पर्यावरण अनुकूल फिनिशिंग तकनीकों का उपयोग शामिल है।
- मुख्य तकनीकी हस्तक्षेपों में बेहतर चरखे व एर्गोनोमिक करघे, सौर ऊर्जा से चलने वाली रंगाई इकाइयाँ और प्री-प्रोसेसिंग तथा गुणवत्ता बढ़ाने वाले उपकरण शामिल हैं।
- ये उपाय मेहनत में कमी लाते हैं, उत्पादकता बढ़ाते हैं और बड़े पैमाने पर उत्पादन को सक्षम करते हुए हस्तनिर्मित स्थिति को बनाए रखते हैं।

वैश्विक फैशन और स्थिरता के संदर्भ में खादी

- वैश्विक फैशन उद्योग का मूल्य लगभग 1.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है। इसमें 300 मिलियन से अधिक लोग कार्यरत हैं और यह दुनिया के सर्वाधिक प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों में से एक है।
- वर्ष 2030 तक इस क्षेत्र में पानी की खपत में 50% की वृद्धि, कार्बन उत्सर्जन में 63% की वृद्धि और कचरा उत्पादन 148 मिलियन टन तक होने की संभावना है।
- अनुमानत: 59.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2022) वाला भारत का परिधान बाज़ार दुनिया का छठा सबसे बड़ा बाज़ार है जो तेजी से शहरीकरण, बढ़ती आय, डिजिटल खुदरा एवं किफायती आकांक्षात्मक फैशन की मांग से प्रेरित है।
- इस संदर्भ में खादी एक बेहतरीन विकल्प प्रदान करता है जो बिजली का कम इस्तेमाल, अति निम्न कार्बन फुटप्रिंट, प्राकृतिक फाइबर व रंग, कारीगरों पर आधारित आपूर्ति शृंखला प्रदान करता है।

खादी बाज़ार का विकास : मुख्य डेटा

- खादी एवं ग्रामोद्योग ने वर्ष 2024-25 में 1.70 लाख करोड़ रुपए के टर्नओवर के साथ एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। उत्पादन 26,109.07 करोड़ रुपए (2013-14) से बढ़कर 1,16,599.75 करोड़ रुपए (2024-25) हो गया है जो 347% की वृद्धि है।
- बिक्री 31,154.19 करोड़ रुपए से बढ़कर 1,70,551.37 करोड़ रुपये हो गई है जो 447% की वृद्धि है। रोजगार में 49.23% की वृद्धि हुई है जिससे 1.94 करोड़ लोगों को सहारा मिला है।
- खादी कपड़ों का उत्पादन 366% बढ़कर 3,783.36 करोड़ रुपए हो गया और खादी कपड़ों की बिक्री छह गुना बढ़कर 7,145.61 करोड़ रुपए हो गई है।

- खादी ग्रामोद्योग भवन, नई दिल्ली ने 110.01 करोड़ रुपए का टर्नओवर हासिल किया और प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) ने 10 लाख से ज़्यादा यूनिट्स को सुविधा दी, जिससे 90 लाख लोगों को रोजगार मिला।
- महिला सशक्तिकरण-
    - 7.43 लाख प्रशिक्षुओं में से 57.45% महिलाएँ थीं।
    - खादी कारीगरों में 80% महिलाएँ हैं।
    - 11 वर्ष में कारीगरों की मज़दूरी में 275% की वृद्धि हुई है।
    - खादी क्षेत्र के समक्ष चुनौतियाँ और आगे की राह

चुनौतियाँ	आगे की राह
सस्ते व मशीन से बने कपड़ों से मुकाबला	प्रामाणिकता खोए बिना नवाचार
अधिक उत्पादन लागत व सीमित विस्तार	सांस्कृतिक अखंडता के साथ डिजाइन आधुनिकीकरण
अपर्याप्त ब्रांडिंग, मार्केटिंग व इंफ्रास्ट्रक्चर	कारीगरों के कल्याण को केंद्र में रखकर बाज़ार का विस्तार
मौसमी मांग के पैटर्न	मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया और वोकल फॉर लोकल जैसी पहलों के साथ तालमेल भारत के विकास की चर्चा में खादी की प्रासंगिकता को मजबूत करता है।
तेजी से बदलता फैशन पैटर्न	मांग समूह के अनुसार नए फैशन को अपनाना
वैश्विक प्रतिस्पर्धा व सप्लाई चेन की सीमाएँ	वैश्विक स्तर पर प्रचार और स्थानीय आपूर्ति शृंखला पर भरोसा

निष्कर्ष

- कभी प्रतिरोध और ग्रामीण सशक्तिकरण का प्रतीक रही खादी, अब स्थायी विकास, समावेशी विकास व सांस्कृतिक पहचान के एक स्तंभ के रूप में फिर से उभरी है। नीतिगत समर्थन, डिजाइन इनोवेशन और पर्यावरणीय जागरूकता से समर्थित यह परंपरा व आधुनिकता के बीच एक पुल का काम करती है। लगातार सुधारों और बाज़ार एकीकरण के साथ खादी भारत की कपड़ा विरासत को संरक्षित कर सकती है और नैतिक एवं स्थायी फैशन के भविष्य का नेतृत्व कर सकती है।

टिकाऊ कृषि के चालक के रूप में खादी

भूमिका

- स्वदेशी और ग्राम स्वराज के गांधीवादी आदर्शों में निहित खादी हाथ से बुने हुए कपड़े से कहीं अधिक का प्रतिनिधित्व करती है। यह आत्मनिर्भरता, श्रम की गरिमा, स्थायी आजीविका और ग्रामीण लचीलेपन का प्रतीक है।
- आत्मनिर्भर भारत, जलवायु कार्रवाई और समावेशी विकास के समकालीन संदर्भ में खादी कृषि, कुटीर उद्योगों, वहनीयता एवं ग्रामीण रोजगार को जोड़ने वाले एक रणनीतिक साधन के रूप में फिर से उभरी है।

गांधीवादी दर्शन और ग्रामीण आत्मनिर्भरता

- महात्मा गांधी ने खादी की कल्पना आर्थिक स्वराज प्राप्त करने के एक साधन के रूप में की थी, जिससे गाँव उत्पादन एवं उपभोग की आत्मनिर्भर इकाइयाँ बन सकें।
- खादी की कताई व पहनाव औपनिवेशिक शोषण के प्रति प्रतिरोध का प्रतीक था, जबकि यह विशेष रूप से कृषि के ऑफ-सीजन के दौरान घरेलू स्तर पर आजीविका सुनिश्चित करता था। इस दर्शन ने ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करने और बाहरी बाज़ारों पर निर्भरता कम करने में खादी की भूमिका की नींव रखी।

संस्थागतकरण और खेत से कपड़े तक संबंध

- स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1957 में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) की स्थापना ने खादी को एक संरचित ग्रामीण विकास साधन में बदल दिया। खादी की मूल्य शृंखला सीधे कृषि को कुटीर उद्योगों से जोड़ती है।
- यह खेतों से कपास, रेशम उत्पादन से रेशम, भेड़ पालन से ऊन, कृषि आधारित खेती से जूट जैसे कच्चे माल का प्रयोग स्रोत के रूप में करती है।
- यह खेत से कपड़े तक का पारिस्थितिकी तंत्र किसानों, कताई करने वालों, बुनकरों एवं संबंधित श्रमिकों के लिए रोजगार पैदा करता है, स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग करता है और पारंपरिक कौशल को संरक्षित करता है।

खादी-कृषि सहजीवन एवं आजीविका सुरक्षा

- खादी छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए, विशेषकर कृषि के कमजोर समय के दौरान आय विविधीकरण प्रदान करती है। ऑफ-सीजन में रोजगार प्रदान करके यह आजीविका सुरक्षा को बढ़ाता है और जलवायु आघातों व फसल खराब होने की भेद्यता को कम करता है।
- महिलाओं को घर-आधारित कताई एवं बुनाई के माध्यम से महत्त्वपूर्ण लाभ होता है जिससे बड़े पूंजी या प्रवासन की आवश्यकता के बिना आर्थिक स्वतंत्रता व सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है।

आर्थिक योगदान एवं ग्रामीण रोजगार

- खादी एवं ग्रामोद्योग एक प्रमुख ग्रामीण आर्थिक इंजन के रूप में उभरे हैं-
- टर्नओवर (वित्त वर्ष 2024-25) : 1.70 लाख करोड़ रुपए
- रोजगार : लगभग 1.94 करोड़ लोग (2013-14 में 1.30 करोड़ से बढ़कर)
- KVIC टर्नओवर (वित्त वर्ष 2023-24) : 1.55 लाख करोड़ रुपए

- बिक्री में बढ़ोतरी : 2013-14 से 400% और उत्पादन में बढ़ोतरी 315%
- नई नौकरियों का सृजन (पिछले दशक में) : 10.17 लाख, जो 81% रोजगार वृद्धि को दर्शाती हैं।
- संकट के कारण होने वाले पलायन को कम करके और गाँव की अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करके खादी GDP वृद्धि, ग्रामीण औद्योगीकरण और किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य में योगदान देती है।

नीतिगत समर्थन और सरकारी पहल

- खादी का कृषि एवं ग्रामीण आजीविका के साथ जुड़ाव प्रमुख योजनाओं के माध्यम से मजबूत होता है-
- शहद मिशन : अतिरिक्त आय और बेहतर परागण के लिए मधुमक्खी पालन
- कुम्हार सशक्तिकरण योजना : कुम्हारों के लिए इलेक्ट्रिक चाक व प्रशिक्षण
- SFURTI : बुनियादी ढाँचे, कौशल व विपणन के लिए क्लस्टर-आधारित विकास

PMEGP : स्वरोजगार के लिए सूक्ष्म-उद्यमों को बढ़ावा

- आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया और वोकल फॉर लोकल के साथ तालमेल
- ये पहलें खादी को पारंपरिक आजीविका व आधुनिक ग्रामीण उद्यमिता के बीच एक पुल के रूप में स्थापित करती हैं।

वहनीयता एवं हरित अर्थव्यवस्था में भूमिका

- खादी निम्नलिखित के माध्यम से सतत कृषि एवं जलवायु कार्रवाई का समर्थन करती है-
- जैविक कपास और प्राकृतिक रेशों का उपयोग
- प्राकृतिक रंगों, न्यूनतम पानी के उपयोग और निम्न रासायनिक इनपुट जैसी पर्यावरण-अनुकूल प्रथाएँ

- हाथ से कताई एवं बुनाई के परिणामस्वरूप कार्बन उत्सर्जन नगण्य
- बिजली पर न्यूनतम निर्भरता से निम्न कार्बन व चक्रीय अर्थव्यवस्था मॉडल का समर्थन
- खादी भारत की नेट जीरो 2070 प्रतिबद्धता के साथ जुड़ी हुई है और दिखाती है कि पारंपरिक उद्योग हरित विकास को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं।
- मोटा अनाज मिशन (श्री अन्न) के साथ एकीकरण जलवायु-स्मार्ट आजीविका को अधिक मजबूत करता है क्योंकि बाजरा को कम पानी की आवश्यकता होती है और यह पोषण बढ़ाता है तथा शुष्क क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।

खादी का आधुनिकीकरण

- प्रासंगिक बने रहने के लिए खादी ने नवाचार, डिजिटलीकरण एवं बाज़ार विस्तार में आधुनिकीकरण को अपनाया है-
- ई-खादी प्लेटफॉर्म कारीगरों को सीधे उपभोक्ताओं को बिक्री करने में सक्षम बनाते हैं
- सौर चरखा मिशन सौर ऊर्जा से चलने वाली कताई को बढ़ावा देता है
- डिजाइन हस्तक्षेप युवाओं व शहरी बाज़ारों को आकर्षित करते हैं
- खादी इंडिया एवं वोकल फॉर लोकल के माध्यम से ब्रांडिंग
- खादी महोत्सव जैसे कार्यक्रम और डिजिटल आउटरीच दृश्यता बढ़ाते हैं
- विश्व स्तर पर खादी एक सतत एवं नैतिक वस्त्र के रूप में पहचान बना रही है जो पर्यावरण के प्रति जागरूक फैशन की अंतर्राष्ट्रीय माँग के अनुरूप है।

निष्कर्ष

- खादी सरलता, श्रम की गरिमा और आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतीक बनी हुई है जबकि यह सतत जीवन एवं समावेशी विकास का प्रतीक बन रही है। कृषि

के साथ गहराई से जुड़ी होने के कारण यह स्थानीय उत्पादन, रोजगार सृजन एवं पर्यावरणीय प्रबंधन के माध्यम से ग्रामीण लचीलेपन को मजबूत करती है।

- जैसे-जैसे भारत अमृत काल और India@2047 की ओर बढ़ रहा है, खादी हरित, समावेशी एवं आत्मनिर्भर विकास की पहचान बन सकती है जिससे भारत नैतिक व टिकाऊ उत्पादन में वैश्विक नेतृत्वकर्ता के तौर पर अपनी जगह बना पाएगा।